

का संस्मरण और आठ ठेकेदारों के लिए अंतिम सांस तक संरक्षित किए। श्री बघेल ने कहा कि तीन एसीआई का ज्वेलर और कुतिल आज भी हजारों महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

एक माह की खाद्य सामग्रीयों का वितरण

रायपुर/नवप्रदेश। केनरा बैंक मानवीय मूल्यों एवं समाज की ओर अग्रसर दायित्व पर हस्ता जोर देता है। इसी परिप्रेक्ष्य में केनरा बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, नया रायपुर गांधी संगठनात्मक सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत दिनांक 15.06.2021 को एक गैर अंतिमिद्ध, महाना गोष्ठी एवं हार्ड, रायपुर के निवासियों के लिए एक माह की खाद्य सामग्रीयों का वितरण किया गया। उक्त कार्यक्रम में श्री मुरारी प्रसाद, उ महा प्रबंधक, केनरा बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर एवं श्री बाबूमणि, सहकाह महा प्रबंधक रायपुर उपस्थित हुए। महामंत्री के इस स्वर पर दि. 01 मई सार्वदा के लिए हार्ड के स्थानित निवासियों ने बैंक अधिकारियों को अपना आभार व्यक्त किया।



संपादकीय

वैक्सिन पर विवाद अनुचित

भारत में कोरोना की वैक्सिन को लेकर विवाद घटने का नाम नहीं ले रहा है। वैक्सिन को लेकर सुनिश्चितता तर्कों से अग्रणी उद्देश्य जा रही है और धूम भी स्थिति पैदा की जा रही है जिसके चलते टीकाकरण अभियान को असफल बनाने की कोशिश हो रही है। अमर यह अफवाह उड़ाई गई है कि भारत में बनी वैक्सिन में मग के खड़े का खून मिलाया जा रहा है। नतीजतन कोवैक्सिन को लेकर लोगों में धूम पैदा हो गया है। ऐसे अफवाहों के कारण ही बहुत से लोग कोरोना की वैक्सिन लगाने से कतरा रहे हैं जिसकी वजह से टीकाकरण के काम में बाधा पड़ रही है। गौरतलब है कि वैक्सिन को लेकर उत्तर समय से सवालिया निशान खड़े किए जाने लगे थे जब इस्का परीक्षण हो रहा था, उस समय लगभग सभी विपक्षी दलों के नेताओं ने वैक्सिन की गुणवत्ता को लेकर सही जवाब दिया था और इन्होंने से कुछ नेताओं ने तो वैक्सिन को लेकर बेहतर अप्रतिजन्क बयानबाजी भी की थी। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने तो इसे भाजपा की वैक्सिन बताकर खुद वह वैक्सिन लगाने से ही इंकार कर दिया था और अपने समर्थकों से भी वैक्सिन न लगाने को कहा था। टीकाकरण अभियान वैसे भी भारत जैसे विशाल अबादी वाले देश में एक बड़ी चुनौती है और ऐसे में यदि वैक्सिन को लेकर नित नए विवाद खड़े किए जाएंगे तो निश्चित रूप से टीकाकरण अभियान की राह में बाधा आएगी। तमाम अवरोधों के बीच अब तक लगभग 24 करोड़ लोगों को कोरोना की वैक्सिन लगा चुकी है लेकिन अभी भी 100 करोड़ से अधिक लोगों को कोरोना की वैक्सिन लगाना बाकी है। जवाब है अभी इस मामले में लंबा समय तक करना है और इस स्थिति में वैक्सिन को लेकर अफवाहों परवान चढ़ने नहीं तो लख और दूर हो जाएगा। इस बीच यदि कोरोना की तीसरी लहर आ गई तो स्थिति किस करतूत हो जाएगी इसका सवाल ही अनुमान लगाया जा सकता है। बेहतर होगा कि राष्ट्रपति में कोरोना वैक्सिन को लेकर वैधानिक का विवाद खड़ा करने से बचना और सभी को वैक्सिन लगाने के लिए प्रेरित करें। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि कोरोना से वैक्सिन ही हमें बचा सकती है।

विचार

निगरानी का बढ़ना होगा तयरा

धमारी सरकार का इस्तेमाल कर कर एमारे विचारविमर्श जा सकता है, 'कॉविड-19 केम-2021' इसका जवाब उद्घरण है। इस घोटाले का खुलासा करने वाली संस्था 'डिस्कवरी' की मर्ने, तो कोरोना मामलों की दूसरी लहर से खूब रहे भारत को मदद पहुँचाने के नाम पर पाकिस्तान से जुड़े कुछ 'विचार' संभलते हैं बेकार चंद 150 करोड़ रुपये से अधिक की रशि जाया की और उसका बहुत मामूली हिस्सा ही भारत भेजा। चूँकि इन संभलने के रिस्के देहतातयों और उन्नीसों से भी हैं, इसलिए माना जा रहा है कि उन्नीसों भारत के नाम पर 'टेरर-फंडिंग' की मदद के नाम पर भेजापड़की का यह कोई बड़ा मामला नहीं है। ऐसी घटनाएं न सिर्फमंदर की बात जोहने वालों के साथ कर नजक है, बल्कि इन लोगों के साथ भी छत है, जो मुक्तिरक वक्त न अपनी उदरता दिखाते हैं। इस घटना के कई पहलु हैं। जब पाकिस्तानी संस्थाओं की तरफसे भारत को मदद का आग्रह किया गया, तब अंशमय देशों में आम सभ्य नहीं की कि दोनों देशों की इतनीसे बेकार एक-दूसरे से खिलाकरपुछ रहे, लेकिन आम जनता का लुट एक ही है। 'इस्लामिक मिफिकर एपेरोएशन ऑफ नॉर्थ अमेरिका' (एमएन) ने इसी का फायदा उठाया। लोगों ने भी दिल खोलकर मदद की, क्योंकि आग्रह के वक्त कोई भी नहीं देखा कि मदद मानने वाले के तार कहां से जुड़े हैं या उसके पीछे क्यों ही ताकत किम संभल रहे, जो कहीं न कहीं खिलाकरपुछ रहे से जुड़े हैं। उन्नीसों की चंद जमा किए और जरूरतमंदों की मदद की। बेकार सलाह लया रहा है कि भारत में 'बुद्धिमान' के नाम पर एक बड़ा धारावा किया गया है, लेकिन अमेरिकी कानून अमर देशों की इतनीसे काबू रखता है। बावें ऐसे किसी संभलने से रिस्के खाना कानून अमर देशों है, जिसे अमेरिकी हुकूमत ने प्रवर्तितकर कर रहा है। इस्लाम, सलाम-ए-पुनवा व हिज्जल मुसलमान ऐसे ही संभलने हैं, जिसे इस्लाम के जुड़े होने के बने किए जा रहे हैं। इसलिए जरूरी है कि अमेरिकी सरकार के साथ मिफिकर भारत इस रिस्के की गारंटी से पड़तात, और यह जानने की कोशिश कर कि इन कतिसे संभलों संभलने को असले मकरदर जमा था और यह भी सुनिश्चित कर कि देशीय को हर-मुसलमान बना मिले। इसके साथ ही जरूरी यह भी है कि इन्होंने मदद करने वाली भारतीय संभलों को भी पंचनाम की जाए और उनके विरुद्ध भी आवश्यक कानूनों हैं। बेहतराल, इस तरह की हरकतों का प्रमुख हिस्सावर संभल मीडिया है। यह घटनामन बताता है कि जब लोगों की जान संभल में हो, तब भी अमानुषिकता लस सोलस मीडिया के दुपुनगम से बाज नहीं आती। इसका यह इतने मालूम नहीं है कि सोलस मीडिया के मंच मानकता के खिलाफकी कानूनीदर में भी हमने देखा है कि किस तरह अमेरिकी संभलने में न अपनी मुक्तिरकी का हल पड़ा। सोलस मीडिया का इस्तेमाल अलातयों से परफेक्ट बनने के लिए ही नहीं, बल्कि दुपुनगर करने में भी खूब किया जा रहा है। रिस्के हीन फेसलतमें न 40 के कतिव उन पंचे पर प्रवर्तितलए हैं, जो कहीं न कहीं पकिस्तानी फैशन से जुड़े थे और उन पर धरती पंचे सुनकरा थी, जो भारत में उपद्रव फैला सकती थी। साफ है, पाकिस्तानी की तरफसे भारत के खिलाफमुहिम जारी है और कोरेना जैसे आग्रह के समय भी यह सोलस मीडिया द्वारा हमें नुकसान पहुँचाने की जुगत में है।

पाठकों की बात

रुला लो सता
रुला लो, सता लो,भले अजनालो तुम जा सर मगर तुम गले भी लगा लो।
लड़ो हमसे भी भर, सिक्काल करो पार।
मिस्से जो कभी तो नजर से उतर लो।
आ चाँद देखो, चंद दिनों के किनारे।
बाँह एक छेदा मक्की तो बना लो।
कलेजे का टुकड़ा तुम्हें सीप छला।
न मेरे पिला की नूँ पाइडो छलली।
नहीं देखा मैं बाप सा कोई आशा इन्हे पूज लो तुम यहाँ सर हुका लो।

- आशा पाण्डेय आझा

मधुमास उमड़ता है
मधुमास उमड़ता है दिल में, जब राह तुम्हारी आती है।
जैसे अक्षरा बरसता है, हरवकाल से छ जाती है।
आँखों से आँसू ढरे हैं, जब वह मन विरहा है नाता।
मधुरिम पृथिवी के आँचल में, सौंदर्य कालिया मुकती है।
जब याद।
- चन्द्रकान्ता अग्रहीहोत्री

पत्र, प्रतिक्रियाएं, सोशल मीडिया

पत्र, प्रतिक्रियाएं, सोशल मीडिया

ज़ख़्म पत्नी जीवन एक सदन सराय आना
जीवन एक सदन सराय आना जाना रहे मुसाफिर। कभी उखड़े कभी भारी। चंद दिनों का लगता डेरा। जीवन एक सदन सराय। कभी पसंदी लपु बसतों में, क्षण-क्षण रिसते हैं कभी कभी कभी अचानक डेर बंदर। जीवन में मकली हलचल। इसा उठता फलत मुसाफिर। मन ही मन लुटता जग। चंद दिनों का लगता डेरा। जीवन एक सदन सराय। कभी पेट की लचारी की, यूँ आँखों में भर लगता। कभी अकेले में भीर के खालीपन की गी गता। कभी और मन यादों के, सिंधु में नोते लगाए। चंद दिनों का लगता डेरा। जीवन एक सदन सराय।
- डॉ प्रकाश गरी

मोसम का 'मेकअप' उतर
मोसम का 'मेकअप' उतर गया अब रोम छिड सब खुल गए धरती अकाश खुल के सँस ले रहे ... मोटे अरकों की बरिफ़ा थी मकली भर कर रहा ली मैंने भीज बोली तरा खुब रीया बादल देखा।
पुल गया धरती का अँचल मोटे अरकों से भर गई है नदिया मोटे अरकों से भर ता लहरों विरह के आँसू जो थे कल तक बने वो मिलन की धारा हीन भर मुक्तिवर नवजवान का झूम उठा जा सागर मोंग की धिक्कन से धिक्की ये पार कण कण सुनारिह है माक भरा।
- हार्प्राक कर रिया

माथे की बिंदियाँ आँखों का
माथे की बिंदियाँ आँखों का काजल फ़ैकी की मुकुटारुट ज़िंजी की आट्ट-टुम बम जाओ चालत की माँफ़िल सारी रू को दिल के अँगन में छुपाओ... रात के तनहाई का आट्ट दर्द-ए-इक की दया तुम नरिता के हर आँसू में सुराई शाम की तरल तुम अना हन दिवताओ...!!
-नदिता तनूजा

योगी के नेतृत्व में यूपी चुनाव लड़ेगी भाजपा

पिछले एक सप्ताह से उत्तर प्रदेश के राजनीतिक परिवारों में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को लेकर तरह तरह की चर्चाएं और अफवाहें चल रही हैं। भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री संतोष चौधरी संतोष और उत्तर प्रदेश के प्रभारी रामाधिन सिंह के दौर बैठकें बाद उनकी वार्सी के बाद जो दिखी से अगुष्ट लेकिन मजबूत संकेत मिले है वह इस बात की तरफपुछा इशारा कर रहे है कि चंद नीकराहों तथा कुछ ऐसे नीकराहता विन्की आस्था तसरे दलों के प्रति अग्रवस्था रूप से देखी जाती रही है उनके कारण जरूर योगी सरकार के कुछ कामकाज प्रभावित हूए है वरना योगी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश में विकास के साथ कोरोना संक्रमण के दौरान बेहतर प्रदर्शन, टंगा विहीन, भ्रष्टाचार विहीन कार्यकाल उनकी योग्यता का प्रमाण है। हॉ ऐसे स्थिति में अगर सरकार के स्तर पर फेकवदल किया गया तो निश्चित तौर पर कुछ मंत्रियों के ताकत घटेंगी तो कुछ का मौका जरूर मिल सकता है। नीकराहा से पैपलरली बनाए गए अरविन्द शर्मा को भी आदम विमोहरी मिलेगा। इसके अलावा नीकराहा में जो बदलाव शुरू हुआ है उसका सिलसिला आगामी चुनाव तक जारी रहेगा। हालांकि अगले महीने भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी नड्डा के भी राज्य के दौर पर जाने की संभावना है। इसके बाद उत्तर प्रदेश में 2022 के चुनाव में नेतृत्व की तसवीर पूरी तरह से साफ हो जाएगी। भाजपा रात्यों में अगले साल होने वाले उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए संयोजनात्मक तैयारी शुरू कर दे। अगले साल विधानसभा चुनाव 2022 में यूपी की जनता को फिर उस का तान-बाना बुनकर बात तैयार कर दिया गया है। उत्तर प्रदेश में हिंदू मुस्लिम अहम युग हिंदुत्व होगा। दवाई, पड़वाई, सिर्माई, बेरोजगारी, विकास और कानून व्यवस्था को पूरी तरह रद्दकरा कर दिया जाएगा। भोली-भाली जनता के सामने हिंदू मुस्लिम का कार्ड खेला जाएगा।



हमला हो या फिर गलतफहमी का साथ ही नक्सलियों द्वारा भारी संख्या में जवान राहरी हुए हैं। यदि समय रहते सरकार गहनता से विचार करती तो शायद हमारे देश के इतनी बड़ी संख्या में जवान राहरी नहीं हुए होते। गोरखपुर में बचने इतनी बड़ी ताँदड़ में अस्पताल के गल में न समाते। कोरोना महामारी में बंगल के साथ ही पांच राज्यों के चुनाव और उत्तर प्रदेश में विस्तरयी पंचायत चुनाव उत्तर दिग गए होते और समय रहते कारण कठम उठ्ठा गए होते और कोरोना संक्रमण को आँसवीजन, बॉटलर, बेड और जीवन बचक दवाई उपलब्ध कराई जाती तो शायद गल में इतनी बड़ी संख्या के अंदरुआ की तसवी न उतरती। हिंदू गीत रियाज के हिंदुआ अपने परिकरनों का अंतिम संस्कार करने के लिए लकड़ी के अभाव में

लाला को दमनाया या फिर बहने पानी में न फेंकना पड़ता। कोरोना काल में प्रवासी मजदूरों को घर तक पहुँचाने के लिए यदि साधन उपलब्ध किए गए होते तो शायद बड़ी संख्या में प्रवासी मजदूरों को परेशानी से उठनी पड़ती और कुछ प्रवासी मजदूरों की जान भी न जाती। इसके अलावा अग्रवस्था पर छात्र शुल्क प्रतियुक्ति और स्कॉलरशिप में वॉचन न रह गए होते। गरीब कन्याओं के

विराम लग गया है। चुनाव नजदीक है ऐसे में संभलन और सरकार में नेतृत्व परिवर्तन को कोई जोरियम नहीं उठाया जा सकता। मीडियावर में बदलाव की जरूरत है इसमें संशय और क्षेत्रीय समीकरणों के हिसाब से नए चेहरों को जिम्मेदारी देने का सुझाव के साथ ही विधानसभा चुनाव तक स्थिति दुर्लभ करने के लिए सई अहम सुझाव भी दिए गए। इसके बावजूद माना जा रहा है कि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा और गृह मंत्री अमित शाह आगे बढ़ें हैं उत्तर प्रदेश में चुनावी कमान संभालेंगे। यह चुनाव तक निश्चित रूप से संक्रमण में प्रवास करती। 2022 के करीब आने के साथ ही अब आयोगों, निर्णायों के खाली पर इसी महीने भरने शुरू हो जाएंगे। सरकार व संभलन में विधानसभा चुनाव तक हर महीने लगातार समन्य बर्कने होंगे। उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनावों का अब बहुत ज्यादा समय नहीं है। देश का सबसे बड़ा राज होने के कारण तैयारियों के लिए पार्टी को ज्यादा समय भी चाहिए। कोरोना के चलते विशाल कोट दल चुनावी तैयारियों पूरी नहीं की जा सकती है। इस समय सरकार और पार्टी की अग्रवस्था कोरोना संक्रमण व अंशुआ साधन और लोगों को रहता देना है। इसके साथ-साथ चुनावी तैयारियों को भी आगे बढ़ाया जाएगा। यही वजह है कि भाजपा नेतृत्व में पिछले पाठ-दर दिनों के अंदर राज की इस स्थिति को लेकर व्यापक विचार-विमर्श भी किया है। उत्तर प्रदेश के कई बैठकों में भी की है। राष्ट्रीय मारुसिध संभलन चौबल संतोष ने लखनऊ का दौर कर राज्य सरकार के मंत्रियों, संभलन के प्रमुख नेताओं के व्यापक फीडबैक लेने के बाद स्पष्ट तो ही लेकिन जनता चुनो यह शायद जरूर कर गई कि आगामी चुनाव का नेतृत्व भी आदित्य नाथ योगी कर सकते हैं

जैसे। हालांकि सला षभ में नेतृत्व परिवर्तन को लेकर फ़िहाल तमाम अटकलों पर

अब बेहतर बौद्धिक समझ बने

विश्वविद्यालय अमूमन ऐसे क्षेत्र माने जाते हैं, जो कम से कम राजनीतिक और सामाजिक युवाओं की रोजगारी की कानिख से दूर हैं, जवकि वे अक्सर उन युवाओं के चर्च और प्रवृत्ति का गंभीर अध्ययन करते हैं। यह दृष्टि उन्हें एक खास सुविधा देती है। वे युवा के चर्चा होने और यह बातों के लिए कुछ इंतजार कर सकते हैं कि इतिहास के एक खास काल में उस दौर का क्या मतलब था? पोस्ट और बौद्धिक स्तर पर अभी जो हालात हैं, वे दायराल यह निर्णय क्षण हैं।

यूनिवर्सिटी इस ज़ादर अग्रवस्था स्थाय्य आधार पर कसके कुछ निगाह जाएगा। उनसे से कुछ निश्चित रूप से जब वैश्विक मामलों के इतिहास के रूप में प्रतिष्ठित होनी होगी। भारत का वैश्वीकरण संक्रमण भारतीय युविका और उद्योग रूप होने चाहिए, इसके बारे में विमर्श की दरकार है। यह कुछ प्रस्तावों की चर्चा कर रहा हूँ, जो वीरों को व्यापक नज़रिये से देखने की बेहतर बौद्धिक समझ विकसित करने की प्रेरित करते हैं। पहला, हमें यह समझना होगा कि किस प्रकार का ज्ञान संचालन है? बेकार यह बहुत हल्का समझ माना जाएगा, लेकिन बहुत विचाराली समझ हमें पीछे नहीं हटाना चाहिए। अभी तो हमारी पहली प्राथमिकता इसा दुर्लभता को हलकन करने का है। कोरोना महामारी का एक विचाराली इशारा देता है। हमें वैज्ञानिक ज्ञान हमारी हकसे दूर कर सकता है। सामाजिक विचार-विमर्श हमें इसकी शुचिता फिर से कायम को जाना चाहिए। भले ही, व्यवहारिक रूप से अभी अपनी एक खास प्रतिष्ठ होती है, व्यवस्था ही मौलिक अनुभवों में निवेश का महत्व काई नहीं भूना चाहिए। रोग एक दिन में नहीं बना था। वैज्ञानिक उद्यम की इमारत तैयार होने लगी चाहिए और बेरोजगारी उद्यम और अनुभवों का ओर बढ़ने के लिए जरूरी संसाधनों का निगमन व पोषण किया जाना चाहिए। हमें यह भी याद रखना होगा कि महामारी का सामाजिक



सामाजिक विज्ञान का व्यापक प्रसार यह विरोध रूप से समझना होगा कि किस प्रकार का ज्ञान संचालन है? बेकार यह बहुत हल्का समझ माना जाएगा, लेकिन बहुत विचाराली समझ हमें पीछे नहीं हटाना चाहिए। अभी तो हमारी पहली प्राथमिकता इसा दुर्लभता को हलकन करने का है। कोरोना महामारी का एक विचाराली इशारा देता है। हमें वैज्ञानिक ज्ञान हमारी हकसे दूर कर सकता है। सामाजिक विचार-विमर्श हमें इसकी शुचिता फिर से कायम को जाना चाहिए। भले ही, व्यवहारिक रूप से अभी अपनी एक खास प्रतिष्ठ होती है, व्यवस्था ही मौलिक अनुभवों में निवेश का महत्व काई नहीं भूना चाहिए। रोग एक दिन में नहीं बना था। वैज्ञानिक उद्यम की इमारत तैयार होने लगी चाहिए और बेरोजगारी उद्यम और अनुभवों का ओर बढ़ने के लिए जरूरी संसाधनों का निगमन व पोषण किया जाना चाहिए। हमें यह भी याद रखना होगा कि महामारी का सामाजिक

प्राधानता आवश्यक है। जो समझ इन समझदार विकल्पों को तैयार करता है, उसके अभाव में दोषाधिक, दोनों में बेहतर होने की संभावना है। ये यह काई नहीं मान सकता है। भारत इस मामले में कोई अग्रवस्था नइहना, नागरिक भावना और नागरिकता के इन मंडलों पर ध्यान देने की जरूरत है, जिसकी इस बहवाद चल रही है। भारत की बात करें, तो यह ज्ञान युनिवर्सिटी मारुसिध और स्थाय्य फोटोकॉल को लाना करने की कानिख की जाती है, तब आमरीक पर नागरिक भावना या अनुप्रासन की कला किसल होने लगता है। बेकार विश्वविद्यालय में अपने से पहले के समय साथ-साथ (परिहार, खुला और कौशल) अपनी विमोहरी का ठीक-ठाक निर्वाह करते हैं, मगर विश्वविद्यालय मारुसिध नागरिक भावना विकसित करने के लिए एक अलग मंच पहुँचा गया है। सामाजिक और राजनीतिक जालकालता इस कार्य के अंतिम अंग है। यह वह काई नक़्सा है कि मैं विश्वविद्यालय के राजनीतिकरण की दलील दे रहा हूँ। बल्कि यह नागरिकों के राजनीतिकरण का निर्माण करने और सीधे से विश्वविद्यालय संभलने में मकरदर लोगों को शामिल करने के लिए समता और सेवा लेने वालों के बीच प्रकट होने वाली जटिलता को चिह्नित कर मानवीयतामय मानवीयज्ञान के रूप में जाहिर करते हैं। अग्रवस्था ईसान द्वारा अदा की जाने वाली उस कीमत का नीलते हैं, जो सार्वजनिक स्थाय्य में पूर्व में पवाँत निवेश न किए जाने के कारण ईसान को चुनौती पड़ती है। शासन की विस्तारताएँ कई राजनीतिक गड़बड़ाईयों की जड़ हैं। यदि हम बाद रह सकते हैं कि महामारी एकमांगी नहीं आती, तो हमारे इतिहासकारों की दीर्घकालिक परिधिमें न अपनी बात रखने को कहा जा सकता है। लोगों का मानसिक स्थाय्य मनोबैधानिकों के लिए तत्काल चिंता का विषय है। लिहाजा, इन क्षेत्रों में ऊँचे दर्जे की समझ विकसित करने के लक्ष्य को

QUIZ TIME

- 1) ओलंपिक शब्द का जन्म किस शब्द से माना जाता है?
- 2) सूर्यगंध कितने है? (4 / 5 / 6)
- 3) मनुष्य को मरते दम तक सत्य बोलना चाहिए और शैतान को लज्जित करना चाहिए। किसने कहा था?
- 4) माउंट तबोरा क्या है?
- 5) अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति का अध्यक्ष किसे बनाया गया है?

क्या है? (5) १) सूर्यगंध 2) सूर्यगंध 3) सूर्यगंध 4) सूर्यगंध 5) सूर्यगंध 6) सूर्यगंध 7) सूर्यगंध 8) सूर्यगंध 9) सूर्यगंध 10) सूर्यगंध 11) सूर्यगंध 12) सूर्यगंध 13) सूर्यगंध 14) सूर्यगंध 15) सूर्यगंध 16) सूर्यगंध 17) सूर्यगंध 18) सूर्यगंध 19) सूर्यगंध 20) सूर्यगंध 21) सूर्यगंध 22) सूर्यगंध 23) सूर्यगंध 24) सूर्यगंध 25) सूर्यगंध 26) सूर्यगंध 27) सूर्यगंध 28) सूर्यगंध 29) सूर्यगंध 30) सूर्यगंध 31) सूर्यगंध 32) सूर्यगंध 33) सूर्यगंध 34) सूर्यगंध 35) सूर्यगंध 36) सूर्यगंध 37) सूर्यगंध 38) सूर्यगंध 39) सूर्यगंध 40) सूर्यगंध 41) सूर्यगंध 42) सूर्यगंध 43) सूर्यगंध 44) सूर्यगंध 45) सूर्यगंध 46) सूर्यगंध 47) सूर्यगंध 48) सूर्यगंध 49) सूर्यगंध 50) सूर्यगंध 51) सूर्यगंध 52) सूर्यगंध 53) सूर्यगंध 54) सूर्यगंध 55) सूर्यगंध 56) सूर्यगंध 57) सूर्यगंध 58) सूर्यगंध 59) सूर्यगंध 60) सूर्यगंध 61) सूर्यगंध 62) सूर्यगंध 63) सूर्यगंध 64) सूर्यगंध 65) सूर्यगंध 66) सूर्यगंध 67) सूर्यगंध 68) सूर्यगंध 69) सूर्यगंध 70) सूर्यगंध 71) सूर्यगंध 72) सूर्यगंध 73) सूर्यगंध 74) सूर्यगंध 75) सूर्यगंध 76) सूर्यगंध 77) सूर्यगंध 78) सूर्यगंध 79) सूर्यगंध 80) सूर्यगंध 81) सूर्यगंध 82) सूर्यगंध 83) सूर्यगंध 84) सूर्यगंध 85) सूर्यगंध 86) सूर्यगंध 87) सूर्यगंध 88) सूर्यगंध 89) सूर्यगंध 90) सूर्यगंध 91) सूर्यगंध 92) सूर्यगंध 93) सूर्यगंध 94) सूर्यगंध 95) सूर्यगंध 96) सूर्यगंध 97) सूर्यगंध 98) सूर्यगंध 99) सूर्यगंध 100) सूर्यगंध 101) सूर्यगंध 102) सूर्यगंध 103) सूर्यगंध 104) सूर्यगंध 105) सूर्यगंध 106) सूर्यगंध 107) सूर्यगंध 108) सूर्यगंध 109) सूर्यगंध 110) सूर्यगंध 111) सूर्यगंध 112) सूर्यगंध 113) सूर्यगंध 114) सूर्यगंध 115) सूर्यगंध 116) सूर्यगंध 117) सूर्यगंध 118) सूर्यगंध 119) सूर्यगंध 120) सूर्यगंध 121) सूर्यगंध 122) सूर्यगंध 123) सूर्यगंध 124) सूर्यगंध 125) सूर्यगंध 126) सूर्यगंध 127) सूर्यगंध 128) सूर्यगंध 129) सूर्यगंध 130) सूर्यगंध 131) सूर्यगंध 132) सूर्यगंध 133) सूर्यगंध 134) सूर्यगंध 135) सूर्यगंध 136) सूर्यगंध 137) सूर्यगंध 138) सूर्यगंध 139) सूर्यगंध 140) सूर्यगंध 141) सूर्यगंध 142) सूर्यगंध 143) सूर्यगंध 144) सूर्यगंध 145) सूर्यगंध 146) सूर्यगंध 147) सूर्यगंध 148) सूर्यगंध 149) सूर्यगंध 150) सूर्यगंध 151) सूर्यगंध 152) सूर्यगंध 153) सूर्यगंध 154) सूर्यगंध 155) सूर्यगंध 156) सूर्यगंध 157) सूर्यगंध 158) सूर्यगंध 159) सूर्यगंध 160) सूर्यगंध 161) सूर्यगंध 162) सूर्यगंध 163) सूर्यगंध 164) सूर्यगंध 165) सूर्यगंध 166) सूर्यगंध 167) सूर्यगंध 168) सूर्यगंध 169) सूर्यगंध 170) सूर्यगंध 171) सूर्यगंध 172) सूर्यगंध 173) सूर्यगंध 174) सूर्यगंध 175) सूर्यगंध 176) सूर्यगंध 177) सूर्यगंध 178) सूर्यगंध 179) सूर्यगंध 180) सूर्यगंध 181) सूर्यगंध 182) सूर्यगंध 183) सूर्यगंध 184) सूर्यगंध 185) सूर्यगंध 186) सूर्यगंध 187) सूर्यगंध 188) सूर्यगंध 189) सूर्यगंध 190) सूर्यगंध 191) सूर्यगंध 192) सूर्यगंध 193) सूर्यगंध 194) सूर्यगंध 195) सूर्यगंध 196) सूर्यगंध 197) सूर्यगंध 198) सूर्यगंध 199) सूर्यगंध 200) सूर्यगंध 201) सूर्यगंध 202) सूर्यगंध 203) सूर्यगंध 204) सूर्यगंध 205) सूर्यगंध 206) सूर्यगंध 207) सूर्यगंध 208) सूर्यगंध 209) सूर्यगंध 210) सूर्यगंध 211) सूर्यगंध 212) सूर्यगंध 213) सूर्यगंध 214) सूर्यगंध 215) सूर्यगंध 216) सूर्यगंध 217) सूर्यगंध 218) सूर्यगंध 219) सूर्यगंध 220) सूर्यगंध 221) सूर्यगंध 222) सूर्यगंध 223) सूर्यगंध 224) सूर्यगंध 225) सूर्यगंध 226) सूर्यगंध 227) सूर्यगंध 228) सूर्यगंध 229) सूर्यगंध 230) सूर्यगंध 231) सूर्यगंध 232) सूर्यगंध 233) सूर्यगंध 234) सूर्यगंध 235) सूर्यगंध 236) सूर्यगंध 237) सूर्यगंध 238) सूर्यगंध 239) सूर्यगंध 240) सूर्यगंध 241) सूर्यगंध 242) सूर्यगंध 243) सूर्यगंध 244) सूर्यगंध 245) सूर्यगंध 246) सूर्यगंध 247) सूर्यगंध 248) सूर्यगंध 249) सूर्यगंध 250) सूर्यगंध 251) सूर्यगंध 252) सूर्यगंध 253) सूर्यगंध 254) सूर्यगंध 255) सूर्यगंध 256) सूर्यगंध 257) सूर्यगंध 258) सूर्यगंध 259) सूर्यगंध 260) सूर्यगंध 261) सूर्यगंध 262) सूर्यगंध 263) सूर्यगंध 264) सूर्यगंध 265) सूर्यगंध 266) सूर्यगंध 267) सूर्यगंध 268) सूर्यगंध 269) सूर्यगंध 270) सूर्यगंध 271) सूर्यगंध 272) सूर्यगंध 273) सूर्यगंध 274) सूर्यगंध 275) सूर्यगंध 276) सूर्यगंध 277) सूर्यगंध 278) सूर्यगंध 279) सूर्यगंध 280) सूर्यगंध 281) सूर्यगंध 282) सूर्यगंध 283) सूर्यगंध 284) सूर्यगंध 285) सूर्यगंध 286) सूर्यगंध 287) सूर्यगंध 288) सूर्यगंध 289) सूर्यगंध 290) सूर्यगंध 291) सूर्यगंध 292) सूर्यगंध 293) सूर्यगंध 294) सूर्यगंध 295) सूर्यगंध 296) सूर्यगंध 297) सूर्यगंध 298) सूर्यगंध 299) सूर्यगंध 300) सूर्यगंध 301) सूर्यगंध 302) सूर्यगंध 303) सूर्यगंध 304) सूर्यगंध 305) सूर्यगंध 306) सूर्यगंध 307) सूर्यगंध 308) सूर्यगंध 309) सूर्यगंध 310) सूर्यगंध 311) सूर्यगंध 312) सूर्यगंध 313) सूर्यगंध 314) सूर्यगंध 315) सूर्यगंध 316) सूर्यगंध 317) सूर्यगंध 318) सूर्यगंध 319) सूर्यगंध 320) सूर्यगंध 321) सूर्यगंध 322) सूर्यगंध 323) सूर्यगंध 324) सूर्यगंध 325) सूर्यगंध 326) सूर्यगंध 327) सूर्यगंध 328) सूर्यगंध 329) सूर्यगंध 330) सूर्यगंध 331) सूर्यगंध 332) सूर्यगंध 333) सूर्यगंध 334) सूर्यगंध 335) सूर्यगंध 336) सूर्यगंध 337) सूर्यगंध 338) सूर्यगंध 339) सूर्यगंध 340) सूर्यगंध 341) सूर्यगंध 342) सूर्यगंध 343) सूर्यगंध 344) सूर्यगंध 345) सूर्यगंध 346) सूर्यगंध 347) सूर्यगंध 348) सूर्यगंध 349) सूर्यगंध 350) सूर्यगंध 351) सूर्यगंध 352) सूर्यगंध 353) सूर्यगंध 354) सूर्यगंध 355) सूर्यगंध 356) सूर्यगंध 357) सूर्यगंध 358) सूर्यगंध 359) सूर्यगंध 360) सूर्यगंध 361) सूर्यगंध 362) सूर्यगंध 363) सूर्यगंध 364) सूर्यगंध 365) सूर्यगंध 366) सूर्यगंध 367) सूर्यगंध 368) सूर्यगंध 369) सूर्यगंध 370) सूर्यगंध 371) सूर्यगंध 372) सूर्यगंध 373) सूर्यगंध 374) सूर्यगंध 375) सूर्यगंध 376) सूर्यगंध 377) सूर्यगंध 378) सूर्यगंध 379) सूर्यगंध 380) सूर्यगंध 381) सूर्यगंध 382) सूर्यगंध 383) सूर्यगंध 384) सूर्यगंध 385) सूर्यगंध 386) सूर्यगंध 387) सूर्यगंध 388) सूर्यगंध 389) सूर्यगंध 390) सूर्यगंध 391) सूर्यगंध 392) सूर्यगंध 393) सूर्यगंध 394) सूर्यगंध 395) सूर्यगंध 396) सूर्यगंध 397) सूर्यगंध 398) सूर्यगंध 399) सूर्यगंध 400) सूर्यगंध 401) सूर्यगंध 402) सूर्यगंध 403) सूर्यगंध 404) सूर्यगंध 405) सूर्यगंध 406) सूर्यगंध 407) सूर्यगंध 408) सूर्यगंध 409) सूर्यगंध 410) सूर्यगंध 411) सूर्यगंध 412) सूर्यगंध 413) सूर्यगंध 414) सूर्यगंध 415) सूर्यगंध 416) सूर्यगंध 417) सूर्यगंध 418) सूर्यगंध 419) सूर्यगंध 420) सूर्यगंध 421) सूर्यगंध 422) सूर्यगंध 423) सूर्यगंध 424) सूर्यगंध 425) सूर्यगंध 426) सूर्यगंध 427) सूर्यगंध 428) सूर्यगंध 429) सूर्यगंध 430) सूर्यगंध 431) सूर्यगंध 432) सूर्यगंध 433) सूर्यगंध 434) सूर्यगंध 435) सूर्यगंध 436) सूर्यगंध 437) सूर्यगंध 438) सूर्यगंध 439) सूर्यगंध 440) सूर्यगंध 441) सूर्यगंध 442) सूर्यगंध 443) सूर्यगंध 444) सूर्यगंध 445) सूर्यगंध 446) सूर्यगंध 447) सूर्यगंध 448) सूर्यगंध 449) सूर्यगंध 450) सूर्यगंध 451) सूर्यगंध 452) सूर्यगंध 453) सूर्यगंध 454) सूर्यगंध 455) सूर्यगंध 456) सूर्यगंध 457) सूर्यगंध 458) सूर्यगंध 459) सूर्यगंध 460) सूर्यगंध 461) सूर्यगंध 462) सूर्यगंध 463) सूर्यगंध 464) सूर्यगंध 465) सूर्यगंध 466) सूर्यगंध 467) सूर्यगंध 468) सूर्यगंध 469) सूर्यगंध 470) सूर्यगंध 471) सूर्यगंध 472) सूर्यगंध 473) सूर्यगंध 474) सूर्यगंध 475) सूर्यगंध 476) सूर्यगंध 477) सूर्यगंध 478) सूर्यगंध 479) सूर्यगंध 480) सूर्यगंध 481) सूर्यगंध 482) सूर्यगंध 483) सूर्यगंध 484) सूर्यगंध 485) सूर्यगंध 486) सूर्यगंध 487) सूर्यगंध 488) सूर्यगंध 489) सूर्यगंध 490) सूर्यगंध 491) सूर्यगंध 492) सूर्यगंध 493) सूर्यगंध 494) सूर्यगंध 495) सूर्यगंध 496) सूर्यगंध 497) सूर्यगंध 498) सूर्यगंध 499) सूर्यगंध 500) सूर्यगंध 501) सूर्यगंध 502) सूर्यगंध 503) सूर्यगंध 504) सूर्यगंध 505) सूर्यगंध 506

आम्हाला स्टोर्स फॅडेशन
आम्हाला स्टोर्स ओलंपिक्स
2022 चे पुरुषांच्या खेल और
गमनाख खेलों के लिए आईओए
का प्रिंसिपल प्रायोजक बन गया
है।

चीनी कलावी ली गिंग को
भारतीय खिलाड़ियों के प्रायोजक
के रूप से हटाए जाने के बाद
आईओए के अध्यक्ष डॉ नरेंद्र
बन वजा और महासचिव जॉन
मेल्हन ने आज एक बयान जारी
कर नए प्रायोजक की घोषणा की।
मेल्हन ने बताया कि कम्पन्यूने ने
डेड वॉर्षों या 31 दिसम्बर
2022 तक के लिए कर दिया
है और उस प्रायोजक के जरिये वह

गमनाख खेलों के लिए भारती
दल को स्टोर्स किट भी उपलब्ध
कराएगा।

फिक्सेड संस्करण में आईओए
को अपना समर्थन दे रहा
आम्हाला स्टोर्स ओलंपिक्स
2022 को समर्थन देने के लिए
आया है। मेल्हन ने बताया कि
अमूल की 31 दिसम्बर 2022 तक
की अर्धवर्ष तक के लिए
प्रायोजन राशि एक करोड़ रुपये
है। उन्होंने उम्मीद जताते हुए
कहा, 'यस उम्मीद करते हैं कि
आने वाले सातोंहों में ऐसी और
अच्छी खबर आयेक सा प्रयोजक
करें क्योंकि एक प्रायोजकों से
अभी तक कुछ नहीं।

com
my
k

